اَلْجُزْءُ الرَّابِعُ (۴)

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ

कामिल नेकी को तुम हरगिज़ नहीं पहोंच सकते जब तक के अपनी महबूब चीज़ में से खर्च न करो।

وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿۹۲﴾ كُلُّ

और जो चीज़ भी खर्च करो, तो यक़ीनन अल्लाह उसे जानते हैं। तमाम

الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ

खाने की चीज़ें बनी इस्राईल के लिए हलाल थीं मगर जो हज़रत याकूब (अलैहिस्सलाम) ने

اِسْرَآءِیْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ

अपने आप पर हराम कर ली थी इस से पेहले के तौरात उतारी जाए।

قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۹۳﴾

आप फरमा दीजिए के फिर तौरात लाओ और उस की तिलावत करो अगर तुम सच्चे हो।

فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ

फिर जो अल्लाह पर झूठ गढ़े इस के बाद

وَقْفُ جِبْرِیْلَ عَلَیْهِ السَّلَامُ

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۹۴﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫ فَاتَّبِعُوْا

तो वही लोग ज़ालिम हैं। आप फरमा दीजिए के अल्लाह ने सच फरमाया। फिर तुम इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत

مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۹۵﴾

का इत्तिबा करो जो एक अल्लाह के हो कर रेहने वाले थे। और मुशरिकीन में से नहीं थे।

اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ

यक़ीनन सब से पेहला घर जो इन्सानों के लिए बनाया गया, अलबत्ता वो घर है जो मक्का में है,

مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۶﴾ فِیْهِ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ

बरकत वाला है और तमाम जहान वालों के लिए हिदायत है। उस में रोशन निशानियाँ हैं,

مَّقَامُ اِبْرٰهِیْمَ ۚ۬ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ

मक़ामे इब्राहीम है। और जो उस में दाखिल हो गया वो अमन वाला हो गया। और अल्लाह के लिए

عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ سَبِیْلًا ؕ

इन्सानों पर फर्ज़ है बैतुल्लाह का हज करना उस शख्स के लिए जो बैतुल्लाह तक रास्ता क़तअ करने की ताक़त रखता हो।

وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۷﴾

और जो काफिर होगा तो यक़ीनन अल्लाह बेनियाज़ है तमाम जहान वालों से।

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ

आप फरमा दीजिए ऐ एहले किताब! अल्लाह की आयात के साथ क्यूं कुफ्र करते हो?

وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۸﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ

और अल्लाह देख रहा है उन आमाल को जो तुम करते हो। आप फरमा दीजिए ऐ एहले किताब!

لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا

क्यूं रोकते हो अल्लाह के रासते से उस शख्स को जो ईमान लाए, तुम उस में कजी

عِوَجًا وَّ اَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

तलाश करते हो इस हाल में के तुम जानते हो। और अल्लाह बेखबर नहीं है उन कामों से जो तुम

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۹﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا

करते हो। ऐ ईमान वालो! अगर तुम केहना मान लोगे

فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ

एहले किताब के एक गिरोह का तो वो तुम्हारे ईमान लाने के बाद

بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۰﴾ وَ كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ

दोबारा तुम्हें काफिर बना देंगे। और कैसे कुफ्र करोगे, हालांके तुम पर

تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَ فِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ

अल्लाह की आयतें तिलावत की जाती हैं और तुम में अल्लाह के रसूल हैं। और जो

يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۰۱﴾ ع

अल्लाह की रस्सी मज़बूत पकड़ेगा, तो यक़ीनन उसे सीधे रास्ते की तरफ हिदायत दी जाती है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो जैसा के उस से डरने का हक़ है

وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَاعْتَصِمُوْا

और तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में के तुम मुसलमान हो। और अल्लाह की रस्सी को

بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ

इकट्ठे हो कर मज़बूत पकड़ो और अलग अलग मत हो। और याद करो अल्लाह की

اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ

उस नेअमत को जो तुम पर है जब के तुम दुशमन थे, फिर अल्लाह ने तुम्हारे दिल जोड़ दिए,

فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ وَ كُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ

फिर तुम अल्लाह की नेअमत की वजह से भाई भाई बन गए। और तुम आग के गढ़े के

مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ

किनारे पर थे, फिर अल्लाह ने तुम्हें वहां से बचा लिया। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें

اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ

बयान करते हैं ताके तुम हिदायतयाफता हो जाओ। और चाहिए के तुम में से एक जमाअत हो

يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ

जो खैर की तरफ बुलाती हो और अम्र बिल मारूफ करती हो और नही

عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا

अनिल मुनकर करती हो। और यही लोग फलाह पाने वाले हैं। और उन लोगों की तरह

كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ

मत बनो जो अलग अलग फिरके हो गए और जिन्हों ने इखतिलाफ किया इस के बाद के उन के पास रोशन

الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۰۵﴾ يَّوْمَ

मोअजिज़ात आए। और उन के लिए भारी अज़ाब होगा। उस दिन जिस दिन

تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ

कुछ चेहरे सफेद होंगे और कुछ चेहरे सियाह होंगे। फिर अलबत्ता वो लोग जिन के

اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۫ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ

चेहरे सियाह होंगे, (उन से कहा जाएगा) क्या तुम ने अपने ईमान लाने के बाद कुफ्र किया?

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۱۰۶﴾

फिर अज़ाब चखो इस वजह से के तुम कुफ्र करते थे।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ

और अलबत्ता वो लोग जिन के चेहरे सफेद होंगे वो अल्लाह की रहमत में होंगे।

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا

वो उस में हमेशा रहेंगे। ये अल्लाह की आयतें हैं जिन को हम आप के सामने हक़ के साथ

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۸﴾

तिलावत करते हैं। और अल्लाह जहान वालों पर जुल्म का इरादा भी नहीं करते।

وَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ

और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

وَ اِلَی اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۱۰۹﴾ كُنْتُمْ خَیْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ ع ۱۴

और अल्लाह ही की तरफ तमाम उमूर लौटाए जाएंगे। तुम बेहतरीन उम्मत हो जो इन्सानों के लिए

لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

निकाली गई है, अम्र बिल मारूफ करते हो और नही अनिल मुनकर करते हो

وَ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ

और अल्लाह पर ईमान रखते हो। और अगर एहले किताब ईमान ले आते तो ये

خَیْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ اَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۱۰﴾

उन के लिए बेहतर होता। उन में से कुछ लोग मोमिन हैं और उन में से अकसर नाफरमान हैं।

لَنْ یَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًی ؕ وَاِنْ یُّقَاتِلُوْكُمْ یُوَلُّوْكُمُ

वो तुम्हें हरगिज़ ज़रर नहीं पहोंचा सकते मगर थोड़ा सा ईज़ा पहोंचाना। और अगर वो तुम से क़िताल करेंगे तो वो तुम से पुश्त

الْاَدْبَارَ ۟ ثُمَّ لَا یُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ ضُرِبَتْ عَلَیْهِمُ الذِّلَّةُ

फेर कर भागेंगे। फिर उन की नुसरत नहीं की जाएगी। उन पर ज़िल्लत मार दी गई

اَیْنَ مَا ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ حَبْلٍ

जहाँ वो पाए जाएं, मगर ऐसे ज़रिए से जो अल्लाह की तरफ से हो और ऐसे ज़रिए से

مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ ضُرِبَتْ

जो इन्सानों की तरफ से हो और वो अल्लाह का ग़ज़ब ले कर लौटे और उन पर

عَلَیْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا یَكْفُرُوْنَ

पस्ती जमा दी गई। ये इस वजह से के वो कुफ्र करते थे

بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَ یَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِیَآءَ بِغَیْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ

अल्लाह की आयात के साथ और अम्बिया को नाहक़ क़त्ल करते थे। ये

بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا یَعْتَدُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ لَیْسُوْا سَوَآءً ؕ

इस वजह से के वो नाफरमान हैं और हद से आगे बढ़ते थे। ये सारे के सारे बराबर नहीं हैं।

مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآىِٕمَةٌ یَّتْلُوْنَ اٰیٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ

एहले किताब में से एक जमाअत है जो हक़ पर क़ाइम है, अल्लाह की आयतों की रात की घड़ियों में तिलावत

الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ

करते हैं और वो नमाज़ भी पढ़ते हैं। वो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आखिरी

الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهَوْنَ

दिन पर और अम्र बिल मारूफ करते हैं और नही अनिल मुनकर करते

عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ وَ اُولٰٓئِكَ

हैं और नेकी के कामों में तेज़ी करते हैं। और ये

مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ

अच्छे लोगों में से हैं। और जो भलाई भी वो करेंगे तो हरगिज़ उस की नाक़दरी नहीं की जाएगी।

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और अल्लाह मुत्तक़ियों को खूब जानते हैं। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया,

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

हरगिज़ उन के कुछ काम नहीं आएंगे न उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह से

شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۱۶﴾

ज़रा भी। और यही लोग दोज़खी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे।

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

उन चीज़ों का हाल जिन को वो इस दुन्यवी ज़िन्दगी में खर्च करते हैं

كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا

उस तूफानी हवा की तरह है जिस में सख्त सरदी हो, जो ऐसी क़ौम की खेती को पहोंची हो जिन्हों ने

اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ

अपनी जान पर ज़ुल्म किया, फिर वो उस को बरबाद कर दे। और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया

وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا

लेकिन वो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। ऐ ईमान वालो! अपने अलावा किसी को

بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ؕ وَدُّوْا

राज़दां मत बनाओ, वो तुम से फसाद करने में कोताही नहीं करते। वो तो चाहते हैं

مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۖۚ

वो चीज़ जिस से तुम मशक्क़त में पड़ो। यक़ीनन बुग्ज़ ज़ाहिर हो चुका है उन के मुंह से।

وَمَا تُخْفِىْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ
और जो उन के सीने छुपाए हुए हैं वो उस से भी बड़ी है। यक़ीनन हम ने तुम्हारे लिए
الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١١٨﴾ هٰۤاَنْتُمْ اُولَآءِ
आयतों को खोल खोल कर बयान किया अगर तुम अक़्ल रखते हो। सुनो! तुम तो वो लोग हो के
تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ
तुम उन से महब्बत करते हो और ये तुम से महब्बत नहीं करते और तुम तमाम किताबों पर ईमान
كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۖۚ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا
रखते हो। और जब ये तुम से मिलते हैं तो اٰمَنَّا (के हम ईमान लाए हैं) केहते हैं। और जब तन्हाई में
عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ؕ
होते हैं, तो तुम पर गुस्से की वजह से उंगलियों के पोरे काटते है। आप केह दीजिए के अपने गुस्से से मर जाओ।
اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١١٩﴾ اِنْ تَمْسَسْكُمْ
यक़ीनन अल्लाह दिलों के हाल को खूब जानते हैं। अगर तुम्हें भलाई
حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۫ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا
पहोंचे तो उन्हें बुरी लगती है। और अगर तुम्हें मुसीबत पहोंचे तो उस से वो खुश हो जाते
بِهَا ؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ
हैं। और अगर सब्र करोगे और मुत्तक़ी बनोगे तो उन का मक्र तुम्हें कुछ भी ज़रर नहीं पहोंचा
شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿١٢٠﴾ ۧ وَاِذْ غَدَوْتَ ع ١٢
सकेगा। यक़ीनन अल्लाह उन के आमाल का इहाता किए हुए है। और जब आप अपने एहल से
مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ
सुबह के वक्त निकले, आप ईमान वालों को लड़ने की जगहों पर मुतअय्यन कर रहे थे।
وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢١﴾ ۙ اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ
और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। जब तुम में से दो जमाअतों ने इरादा किया के
اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
वो हिम्मत हार बैठें, हालांके अल्लाह उन का कारसाज़ है। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल
الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ
करना चाहिए। और यक़ीनन अल्लाह ने तुम्हारी नुसरत फरमाई बदर में इस हाल

اَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

में के तुम कमज़ोर थे। फिर तुम अल्लाह से डरो ताके तुम शुक्र अदा करो।

اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ

जब के आप ईमान वालों से फरमा रहे थे के क्या तुम्हें काफी नहीं है के तुम्हारा रब

رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿۱۲۴﴾

तुम्हारी इमदाद करे तीन हज़ार फरिश्तों के ज़रिए जो उतारे जाएंगे।

بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَ يَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ

क्यूं नहीं! अगर तुम सब्र करोगे और मुत्तक़ी बनोगे तो वो तुम्हारे पास फौरन आ जाएंगे,

هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ

ये वो है के तुम्हारा रब पाँच हज़ार निशानज़दा फरिश्तों के ज़रिए तुम्हारी इमदाद

مُسَوِّمِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ ع

करेगा। और अल्लाह ने उस को नहीं बनाया मगर तुम्हारे लिए बशारत

وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۭ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا

और इस लिए ताके तुम्हारे दिल उस से मुतमइन हों। और नुसरत तो सिर्फ ज़बर्दस्त, हिक्मत वाले

مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿۱۲۶﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا

अल्लाह ही की तरफ से आती है। ताके वो काफिरों के एक गिरोह को

مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَاۗىِٕبِيْنَ ﴿۱۲۷﴾

काट कर रख दे या उन्हें (कैदी बना कर) ज़लील करे, के वो नाकाम वापस चले जाएं।

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ

आप का इस मुआमले में कोई इखतियार नहीं है, चाहे अल्लाह उन की तौबा क़बूल करे

اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

या उन्हें अज़ाब दे, क्यूंके वही लोग ज़ालिम हैं। और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं

وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَ يُعَذِّبُ

और जो ज़मीन में हैं। अल्लाह मग़फिरत करते हैं जिस की चाहते हैं और अज़ाब

مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۹﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ ع

देते हैं जिसे चाहते हैं। और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। ऐ ईमान

اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۠

वालो! कई कई गुना कर के सूद मत खाओ।

وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۚ﴿۱۳۰﴾ وَاتَّقُوا النَّارَ

और अल्लाह से डरो ताके तुम फलाह पाओ। और डरो उस आग से

الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۚ﴿۱۳۱﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ

जो काफिरों के लिए तय्यार की गई है। और अल्लाह और रसूल का केहना मानो

لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۚ﴿۱۳۲﴾ وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ

ताके तुम पर रहम किया जाए। और अपने रब की मग़फिरत की तरफ

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ ۙ

दौड़ो और ऐसी जन्नत की तरफ जिस की चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है,

اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۱۳۳﴾ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ

जो मुत्तक़ियों के लिए तय्यार की गई है। उन के लिए जो खर्च करते हैं आसानी और

وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ

तकलीफ में और जो गुस्से को पी जाने वाले हैं और लोगों को

عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۚ﴿۱۳۴﴾ وَالَّذِيْنَ

मुआफ करने वाले हैं। और अल्लाह एहसान करने वालों से महब्बत फरमाते हैं। और वो लोग हैं

اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا

के जब वो कोई बुरा काम कर बैठते हैं या अपनी जान पर जुल्म कर लेते हैं, तो अल्लाह को याद करने

اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۠ وَمَنْ يَّغْفِرُ

लग जाते हैं, फिर अपने गुनाहों की मुआफी तलब करते हैं। और सिवाए अल्लाह के

الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۟ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا

कौन गुनाह मुआफ कर सकता है? और वो अपने किए पर इसरार नहीं करते

وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ

इस हाल में के वो जानते हों। उन का बदला उन के रब की तरफ से मग़फिरत है

مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

और जन्नतें हैं जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ قَدْ

जिन में वो हमेशा रहेंगे। और ये काम करने वालों का कितना अच्छा बदला है। यक़ीनन

خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ

तुम से पेहले तरीक़े गुज़र चुके, तो ज़मीन में चलो फिरो

فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۳۷﴾ هٰذَا

फिर देखो के झुठलाने वालों का अन्जाम कैसा हुवा? ये

بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَ هُدًى وَّ مَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۳۸﴾

इन्सानों के लिए बयान है और हिदायत और मुत्तक़ियों के लिए नसीहत है।

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ

और हिम्मत न हारो और ग़म न करो और तुम ही बुलन्द रहोगे अगर

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۹﴾ اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ

तुम ईमान वाले हो। अगर तुम्हें ज़ख्म पहोंचा है तो उसी जैसा ज़ख्म उस क़ौम को

قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ

भी पहोंच चुका है। और ये जंगें हैं जिन को हम इन्सानों के दरमियान अदलते बदलते रहा करते हैं।

وَ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ

और ताके अल्लाह जान ले उन को जो ईमान वाले हैं और तुम में से शुहदा बनाए।

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

और अल्लाह ज़ालिमों से महब्बत नहीं करते। और इस लिए ताके अल्लाह खालिस करे उन को

اٰمَنُوْا وَ يَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۱﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا

जो ईमान लाए और काफिरों को मिटाए। क्या तुम ने ये समझ रखा है के जन्नत में दाखिल

الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ

हो जाओगे हालांके अब तक अल्लाह ने मालूम नहीं किया उन को जो तुम में से मुजाहिद हैं

وَ يَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۲﴾ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ

और अब तक सब्र करने वालों को मालूम नहीं किया। और यक़ीनन तुम मौत की तमन्ना करते थे

مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۪ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ

इस से पेहले के उस से मिलो। तो यक़ीनन तुम ने उस को अपनी आँखों

تَنْظُرُوْنَ ﴿۱۴۳﴾ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ ع ۱۴ ۵

से देख लिया। और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम) नहीं हैं मगर भेजे हुए पैगम्बर। यक़ीनन आप से पेहले

مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ

बहोत से पैगम्बर गुज़र चुके। क्या फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम) मर जाएं या क़त्ल किए जाएं तो तुम अपनी एड़ियों

عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ

के बल पलट जाओगे। और जो भी अपनी एड़ियों के बल पलट जाएगा

فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَ سَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾

तो वो अल्लाह को हरगिज़ ज़रा भी ज़रर नहीं पहोंचा सकेगा। और अनक़रीब अल्लाह शुक्र करने वालों को बदला देंगे।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا

और किसी जानदार की ये ताक़त नहीं है के वो मर सके मगर अल्लाह के हुक्म से लिखी हुई (मुक़र्रर की हुई)

مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ

मुद्दत पर। और जो दुन्या के सवाब का इरादा करेगा तो हम उस को उस में से कुछ दे देंगे।

وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى

और जो आखिरत के सवाब का इरादा करेगा तो हम उस को उस में से कुछ दे देंगे। और अनक़रीब हम

الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۵﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ

शुक्र अदा करने वालों को बदला देंगे। और बहोत से नबी थे के उन के साथ बहोत से

رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَاۤ اَصَابَهُمْ

अल्लाह वालों ने क़िताल किया। फिर उन मुसीबतों की वजह से जो उन्हें पहोंचीं अल्लाह के रास्ते में उन्हों

فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ وَاللّٰهُ

ने न हिम्मत हारी और न कमज़ोरी दिखाई और न दबे। और अल्लाह

يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۶﴾ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ

सब्र करने वालों से महब्बत फरमाते हैं। और उन की दुआ सिर्फ ये थी

اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ اِسْرَافَنَا

के केहने लगे ऐ हमारे रब! तू हमारे लिए हमारे गुनाह बख्श दे और इस काम में हमारी ज़्यादती

فِىْۤ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَ انْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ

मुआफ कर दे और हमारे क़दम जमा दे और काफिर क़ौम के खिलाफ हमारी नुसरत

الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۷﴾ فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا

फरमा। तो अल्लाह ने उन्हें दुन्या का सवाब भी दिया

وَ حُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴۸﴾ ع ۱۵

और आखिरत का बेहतर सवाब भी दिया। और अल्लाह नेकी करने वालों से महब्बत फरमाते हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफिरों का केहना मान लोगे

يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۱۴۹﴾

तो वो तुम्हें तुम्हारी एड़ियों के बल पलटा कर मुर्तद बना देंगे, फिर तुम नुक़सान उठाने वाले बन जाओगे।

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَ هُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿۱۵۰﴾ سَنُلْقِيْ

बल्के अल्लाह तुम्हारा मौला है। और वो बेहतरीन नुसरत करने वाला है। अनकरीब हम काफिरों

فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ

के दिलों में रौब डाल देंगे, इस वजह से के वो शरीक ठेहराते हैं अल्लाह के साथ

مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَ بِئْسَ

ऐसी चीज़ें जिन पर अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी। और उन का ठिकाना दोज़ख है। और वो

مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۵۱﴾ وَ لَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ

ज़ालिमों का बुरा ठिकाना है। और यक़ीनन अल्लाह ने तुम से अपना वादा सच कर दिखाया

اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ

जब तुम उन कुफ्फार को अल्लाह के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे। यहां तक के जब तुम हिम्मत हार बैठे

وَ تَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَ عَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

और तुम ने इस मुआमले में आपस में झगड़ा किया और तुम ने नाफरमानी की इस के बाद के

مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا

अल्लाह ने दिखाई वो (फत्ह) जो तुम पसन्द करते थे। तुम में से कुछ वो हैं जो दुन्या चाहते हैं

وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ

और तुम में से कुछ वो हैं जो आखिरत चाहते हैं। फिर अल्लाह ने तुम्हें उन से फेर दिया ताके अल्लाह तुम्हें

لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَ لَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ

आज़माए। और यक़ीनन अल्लाह ने तुम्हें मुआफ कर दिया। और अल्लाह ईमान वालों पर

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۵۳﴾ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ

फ़ज़्ल वाले हैं। जब तुम पहाड़ पर चढ़े चले जा रहे थे और पीछे मुड़ कर किसी को

عَلٰٓى اَحَدٍ وَّ الرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ

देखते भी नहीं थे हालांके रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हें पुकार रहे थे तुम्हारे पीछे, फिर अल्लाह ने

غَمًّا ۢ بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا

तुम्हें ग़म के बदले ग़म दिया ताके तुम ग़म न करो उस फत्ह पर जो तुम से फौत हो गई ओर न उस शिकस्त पर

مَآ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵۳﴾

जो तुम्हें पहोंची। और अल्लाह बाखबर है उन कामों से जो तुम करते हो।

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى

फिर अल्लाह ने तुम पर ग़म के बाद इतमिनान वाली ऊँघ उतारी जो तुम में से एक जमाअत

طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ

पर तारी थी और एक जमाअत को अपनी जानों का फिक्र था,

يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ؕ

वो अल्लाह के साथ हक़ के अलावा का जाहिलीयत का गुमान करते थे।

يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ

वो केहते थे के हमारे लिए इस मुआमले में कोई इखतियार नहीं है। आप फरमा दीजिए

اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ

के तमाम उमूर अल्लाह के कब्ज़े में हैं। वो अपने दिलों में छुपाते हैं वो जिस को

مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ؕ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ

आप के सामने ज़ाहिर नहीं करते थे। वो मुनाफिक़ीन केहते थे के अगर हमारा इस मुआमले में कोई भी इखतियार

شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ

होता तो हम यहां क़त्ल न किए जाते। आप फरमा दीजिए के अगर तुम अपने घरों में भी रेहते

لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ

तो भी यक़ीनन मुबारिज़ बन कर निकलते वो जिन पर क़त्ल होना लिख दिया गया था, (वो निकलते) अपने क़त्ल होने की जगहों की तरफ।

وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا

और अल्लाह ने ऐसा इस लिए किया ताके अल्लाह इम्तिहान ले उस का जो तुम्हारे सीनों में है और ताके साफ करे उस को जो

فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۵۴﴾

तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह दिलों के हाल को खूब जानते हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ

यक़ीनन वो लोग जो तुम में से मैदान छोड़ कर चले गए उस दिन जिस दिन दोनों लश्कर बाहम मुक़ाबिल हुए,

اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ

तो उन को तो सिर्फ शैतान ने फ़ुसलाया उन बाज़ हरकतों की वजह से जो उन्हों ने कीं।

وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۵۵﴾ ع ۱۶

यक़ीनन अल्लाह ने उन्हें मुआफ कर दिया। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, हिल्म वाले हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

ऐ ईमान वालो! तुम उन की तरह मत बनो जिन्हों ने कुफ्र किया

وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي الْاَرْضِ

और जिन्हों ने अपने भाइयों से कहा जब वो ज़मीन में सफर करते हैं

اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا

या ग़ाज़ी बन कर जाते हैं के अगर वो हमारे पास रेहते तो न मरते

وَمَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ

और क़त्ल न किए जाते। ताके अल्लाह उस को उन के दिलों में हसरत बनाए।

وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۵۶﴾

और अल्लाह ही ज़िन्दगी देते हैं और मौत देते हैं। और अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं।

وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ

और अगर तुम अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किए जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की तरफ से मग़फिरत

مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ وَلَئِنْ مُّتُّمْ

और रहमत बेहतर है उस दौलत से जिसे वो जमा कर रहे हैं। और अगर मर जाओ

اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِ اِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ فَبِمَا رَحْمَةٍ

या तुम क़त्ल किए जाओ तो यक़ीनन अल्लाह ही की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे। फिर अल्लाह की रहमत की

مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ

वजह से ही उन के लिए आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम) नर्म हो गए हैं। और अगर आप सख्त या सख्त दिल वाले होते

لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۪ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ

तो यक़ीनन सहाबाए किराम आप के आस पास से मुन्तशिर हो जाते। इस लिए आप उन्हें मुआफ कीजिए और उन के लिए मग़फिरत

لَهُمْ وَ شَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ

तलब कीजिए और कामों में उन से मशवरा लेते रहिए। फिर जब आप पुख्ता इरादा कर लें तो अल्लाह ही पर

عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿۱۵۹﴾ اِنْ يَّنْصُرْكُمُ

तवक्कुल कीजिए। यक़ीनन अल्लाह तवक्कुल करने वालों से महब्बत फरमाते हैं। अगर अल्लाह तुम्हारी नुसरत करे

اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ

तो तुम पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता। और अगर वो तुम्हारी नुसरत छोड़ दे तो अल्लाह

ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

के बाद कौन है जो तुम्हारी नुसरत करे? और अललाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल

الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ

करना चाहिए। और किसी नबी की ये शान नहीं है के वो खयानत करे। और जो

يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى

खयानत करेगा तो ले कर आएगा क़यामत के दिन वो चीज़ जिस में खयानत की है। फिर हर शख्स को

كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۱﴾ اَفَمَنِ

अपने किए का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा। क्या फिर

اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ

वो शख्स जिस ने अल्लाह की खुशनूदी का इत्तिबा किया उस शख्स की तरह हो सकता है जो अल्लाह का गज़ब ले कर लौटा

وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۶۲﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ

और उस का ठिकाना जहन्नम है? और वो बुरी जगह है। वो अल्लाह के पास मुख्तलिफ दरजात

عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶۳﴾ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ

में होंगे। और अल्लाह देख रहे हैं उन कामों को जो वो कर रहे हैं। यक़ीनन अल्लाह ने एहसान फरमाया

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ

ईमान वालों पर जब के उन में रसूल भेजा उन्ही में से

يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَ يُزَكِّيْهِمْ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ

जो उन पर अल्लाह की आयतें तिलावत करते हैं और उन का तज़किया करते हैं और उन्हें किताब और हिक्मत की

وَالْحِكْمَةَ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۶۴﴾

तालीम देते हैं। और यक़ीनन वो उस से पेहले अलबत्ता खुली गुमराही में थे।

اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ

क्या तुम्हें जो एक मुसीबत पहोंची तो उस की दुगनी तुम उन काफिरों को नहीं पहोंचा चुके?

قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ

तुम केहते हो के ये मुसीबत कहां से आ गई? आप फरमा दीजिए के ये तुम्हारी ही तरफ से आई।

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۶۵﴾ وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ

यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। और जो मुसीबत तुम्हें पहोंची उस दिन जिस दिन

الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۶۶﴾

दोनों लश्कर बाहम मुक़ाबिल हुए वो अल्लाह के हुक्म से (पहोंची) और इस लिए ताके अल्लाह ईमान वालों को मालूम करें।

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚۖ وَ قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا

और ताके अल्लाह मुनाफिक़ीन को मालूम करें। हालांके उन से कहा गया के आओ,

قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ

अल्लाह के रास्ते में क़िताल करो, या कम अज़ कम दिफाअ तो करो। तो वो केहते हैं के अगर हम ढंग की लड़ाई

قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ

जानते तो हम ज़रूर तुम्हारे पीछे चलते। वो उस दिन ईमान की बनिस्बत कुफ्र के ज़्यादा

مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ

क़रीब थे। वो अपने मुंह से ऐसी बात केहते थे जो उन के

فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿۱۶۷﴾ اَلَّذِيْنَ

दिलों में नहीं थी। और अल्लाह खूब जानते हैं जो वो छुपा रहे हैं। वो लोग जो

قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ

अपने भाइयों से केहते हैं, और खुद बैठ गए हैं, के अगर ये हमारा केहना मानते तो वो क़त्ल न किए जाते।

قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ

आप फरमा दीजिए के फिर तुम अपने आप से मौत को दफा करो अगर

صٰدِقِيْنَ ﴿۱۶۸﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ

सच्चे हो। और आप उन लोगों को जो अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किए जाएं

اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿١٦٩﴾ ۙ
मुर्दे गुमान न करें। बल्के वो अपने रब के पास ज़िन्दा हैं, उन्हें रोज़ी दी जाती है।
فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَ يَسْتَبْشِرُوْنَ
वो खुश हैं उस पर जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन को दिया है और वो खुशखबरी पहोंचाना चाहते हैं
بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ
उन लोगों को जो उन से नहीं मिले उन के पीछे वालों में से इस बात की के उन पर न खौफ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٧٠﴾ ۘ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ
है और न वो ग़मगीन हैं। वो खुशखबरी पहोंचाना चाहते हैं अल्लाह की
مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
नेअमत की और अल्लाह के फ़ज़्ल की और इस बात की के अल्लाह ईमान वालों का अज्र ज़ायेअ नहीं
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٧١﴾ ۚۛ اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ
करेंगे। वो लोग जिन्हों ने अल्लाह और रसूल का हुक्म माना
مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا
इस के बाद के उन को ज़ख्म पहोंचा, उन लोगों के लिए जो उन में से नेक हैं
مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٢﴾ ۚ اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ
और मुत्तक़ी हैं, उन के लिए भारी अज्र है। वो लोग जिन से लोगों ने
النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ
कहा के यक़ीनन ये लोग तुम्हारे लिए जमा हो गए हैं, तो तुम उन से डरो
فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖۗ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿١٧٣﴾
तो उस चीज़ ने उन के ईमान को और बढ़ा दिया। और उन्हों ने कहा के अल्लाह हमें काफी है और बेहतरीन कारसाज़ है।
فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ
फिर वो अल्लाह की नेअमत और अल्लाह के फ़ज़्ल को ले कर लौटे, उन को किसी तकलीफ ने
سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿١٧٤﴾
छुवा तक नहीं और उन्हों ने अल्लाह की खुशनूदी का इत्तिबा किया। और अल्लाह भारी फ़ज़्ल वाले हैं।
اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۠ فَلَا تَخَافُوْهُمْ
ये तो सिर्फ शैतान अपने दोस्तों से डराता है। तो तुम उन से मत डरो

وقف لازم

ع ۱۷ / ۸

مع عند المتقدمين ۱۲

وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۵﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ

और मुझ से डरो अगर ईमान वाले हो। और आप को ग़मगीन न करें

الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا

वो लोग जो कुफ़्र में तेज़ी कर रहे हैं। यक़ीनन वो अल्लाह को ज़रा भी ज़रर नहीं

اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا

पहोंचा सकेंगे। अल्लाह ये चाहते हैं के उन के लिए आखिरत में कोई हिस्सा

فِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا

न रखें। और उन के लिए भारी अज़ाब होगा। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ़्र को

الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَلَهُمْ

ईमान के बदले में खरीदा, वो अल्लाह को ज़रा भी ज़रर हरगिज़ नहीं पहोंचा सकेंगे। और उन के लिए

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۷﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا

दर्दनाक अज़ाब होगा। और वो लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया वो ये न समझें के जो

نُمْلِىْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ

हम उन को ढील दे रहे हैं, ये उन के लिए बेहतर है। हम तो सिर्फ उन को ढील दे रहे हैं

لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۷۸﴾ مَا كَانَ

इस लिए ताके वो गुनाह में और बढ़ें। और उन के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब होगा। अल्लाह ऐसा नहीं है

اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ

के ईमान वालों को छोड़ दे उस पर जिस पर तुम हो जब तक के अच्छे

الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ

से बुरे को अलग न कर दे। और अल्लाह ऐसा नहीं है के तुम्हें ग़ैब

عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ

पर मुत्तलेअ करे लेकिन अल्लाह मुन्तखब करते हैं अपने पैगम्बरों में से जिसे

يَّشَآءُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا

चाहते हैं। तो अल्लाह पर और उस के पैगम्बर पर ईमान ले आओ। और अगर तुम ईमान लाओगे

وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۹﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ

और मुत्तक़ी बनोगे तो तुम्हारे लिए भारी अज्र होगा। और वो लोग जो बुख्ल करते हैं

يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ

उन चीज़ों में जो अल्लाह ने उन को अपने फ़ज़्ल से दी हैं, वो ये न समझें के ये बुख़्ल उन के लिए बेहतर है।

بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ

बल्के ये उन के लिए बुरा है। क़यामत के दिन अनक़रीब तौक़ बना कर पेहनाए जाएंगे उन को वो जिस के

الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

साथ उन्हों ने बुख़्ल किया। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की मीरास है।

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۸۰﴾ لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ ع ۱۵

और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाख़बर है। यक़ीनन अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन

الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ

ली जिन्हों ने कहा के यक़ीनन अल्लाह फक़ीर है और हम ग़नी हैं।

سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ

अनक़रीब हम लिख रहे हैं उस को जो उन्हों ने कहा और उन के अम्बिया को नाहक़ क़त्ल करने को (हम लिख रहे हैं)।

وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿۱۸۱﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ

और हम कहेंगे के आग का अज़ाब चखो। ये अज़ाब उन आमाल के बदले में है जिन को तुम्हारे

اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۱۸۲﴾ ۚ

हाथों ने आगे भेजा और ये के अल्लाह बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म करने वाला नहीं है।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ

वो लोग जिन्हों ने कहा के यक़ीनन अल्लाह ने हमें ताकीदी हुक्म दिया है ये के हम ईमान न लाएं

لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ

किसी पैग़म्बर पर जब तक के वो हमारे पास ऐसी क़ुरबानी न लाए जिस को आग खा जाए। आप फरमा दीजिए के

قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ

यक़ीनन तुम्हारे पास मुझ से पेहले पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए और उस चीज़ को भी ले कर आए

قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۸۳﴾

जो तुम ने कही। फिर तुम ने उन को क्यूं क़त्ल किया अगर सच्चे हो।

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ

फिर अगर वो आप को झुठलाएं तो यक़ीनन आप से पेहले पैग़म्बर झुठलाए गए जो

ع ۱۵ وقف لازم

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۱۸۴﴾ كُلُّ نَفْسٍ

रोशन मोअजिज़ात और लिखी हुई किताबें और रोशन किताब ले कर आए। हर शख्स

ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

मौत का मज़ा चखने वाला है। और तुम्हें तुम्हारे सवाब क़यामत के दिन पूरे पूरे दिए जाएंगे।

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَ اُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ

फिर जिस शख्स को आग से दूर रख गया और जन्नत में दाखिल किया गया तो यक़ीनन वो कामयाब हो गया।

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۱۸۵﴾ لَتُبْلَوُنَّ

और दुन्यवी ज़िन्दगी नहीं है मगर धोके का सामान। तुम्हें तुम्हारे

فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۫ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ

मालों में और तुम्हारे नफ्सों में ज़रूर आज़माया जाएगा। और उन लोगों की तरफ से जिन को तुम से पेहले

اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا

किताब दी गई और मुशरिकीन की तरफ से बहोत सी ईज़ा पहोंचाने वाली चीज़ें

اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ

ज़रूर सुनोगे। और अगर सब्र करोगे और मुत्तक़ी रहोगे, तो यक़ीनन ये

مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۸۶﴾ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ

ताकीदी उमूर से है। और जब के अल्लाह ने उन लोगों से पुख्ता अहद लिया

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ

जिन को किताब दी गई के तुम उस को लोगों के सामने ज़रूर बयान करोगे

وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ۡ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا

और तुम उस को छुपाओगे नहीं। फिर उन्हों ने उस अहद को अपनी पीठ पीछे फैंक दिया और उस के बदले में

بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ لَا تَحْسَبَنَّ

थोड़ी क़ीमत ले ली। फिर बुरा है वो जिस को वो खरीद रहे हैं। आप गुमान न कीजिए

الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا

वो लोग जो खुश होते हैं उन हरकतों पर जो वो कर रहे हैं और वो चाहते हैं के उन की तारीफ की जाए

بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ

ऐसे कामों में जो उन्हों ने नहीं किए तो आप उन को अज़ाब से नजात में गुमान न कीजिए।

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۸۸﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की सलतनत है।

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۸۹﴾ اِنَّ فِىْ خَلْقِ ع ۱۹ ۱۰

और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत वाले हैं। यक़ीनन आसमानों और

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ

ज़मीन के पैदा करने और रात और दिन के आने जाने में

لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾ الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ

अक़्ल वालों के लिए निशानियां है। उन के लिए जो अल्लाह को याद करते हैं

قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ

खड़े और बैठे और अपने पेहलू पर लेट कर और वो गौर व फिक्र करते हैं

فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ

आसमानों और ज़मीन के पैदा करने में। ऐ हमारे रब! तू ने इस को बेकार

هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾ رَبَّنَآ

पैदा नहीं किया। तू पाक है, तो तू हमें आग के अज़ाब से बचा ले। ऐ हमारे रब!

اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ

यक़ीनन जिस को तू आग में दाखिल करेगा तो यक़ीनन तू ने उस को रूस्वा कर दिया।

وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا

और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं होगा। ऐ हमारे रब! यक़ीनन हम ने एक मुनादी को सुना

يُّنَادِىْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا

जो ईमान की आवाज़ लगा रहा था के ईमान ले आओ अपने रब पर, फिर हम ईमान ले आए। ऐ हमारे रब!

فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا

फिर तू हमारे गुनाह बख़्श दे और हम से हमारी बुराइयाँ दूर कर दे और तू हमें नेक लोगों के साथ वफात

مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿۱۹۳﴾ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ

दे। ऐ हमारे रब! और तू हमें वो चीज़ अता फरमा जिस का तू ने हम से वादा किया तेरे पैग़म्बरों की ज़बानी

وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۱۹۴﴾

और तू हमें क़यामत के दिन रूस्वा न कर। यक़ीनन तू वादे के खिलाफ नहीं करेगा।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّیْ لَاۤ اُضِیْعُ عَمَلَ عَامِلٍ

फिर उन के रब ने उन की दुआ क़बूल कर ली के मैं तुम में से किसी अमल करने वाले के अमल को ज़ायेअ नहीं

مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰىۚ بَعْضُكُمْ

करूंगा, वो मर्दों में से हो या औरतों में से। तुम में से एक

مِّنْۢ بَعْضٍۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ

दूसरे से हो। फिर वो लोग जिन्हों ने हिजरत की और जो निकाल दिए गए अपने घरों से

وَ اُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَ قٰتَلُوْا وَ قُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ

और जिन को ईज़ा दी गई मेरे रास्ते में और जिन्हों ने क़िताल किया और वो क़त्ल किए गए तो मैं उन से उन की

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ لَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

बुराइयाँ ज़रूर दूर कर दूंगा और मैं उन्हें ज़रूर दाख़िल करूंगा ऐसी जन्नतों में जिन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِؕ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗ

नेहरें बेहती होंगी। अल्लाह की तरफ से सवाब के तौर पर। और अल्लाह के पास

حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿۱۹۵﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ

बेहतरीन सवाब है। आप को धोके में न डाले उन काफिरों का

كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ﴿۱۹۶﴾ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ

मुल्कों में आना जाना। ये थोड़ा नफा उठाना है, फिर उन का ठिकाना

جَهَنَّمُؕ وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۹۷﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ

जहन्नम है। और वो बुरा बिछौना है। लेकिन वो लोग जो अपने रब से डरते हैं

لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

उन के लिए बाग़ात (जन्नतें) होंगे जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी जिन में वो हमेशा

فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِؕ وَ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ

रहेंगे, अल्लाह की तरफ से ज़ियाफत के तौर पर। और जो अल्लाह के पास है वो नेक लोगों के लिए

لِّلْاَبْرَارِ ﴿۱۹۸﴾ وَ اِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ

बेहतर है। और यक़ीनन एहले किताब में से अलबत्ता वो भी हैं जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर

وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ

और उस किताब पर जो तुम्हारी तरफ उतारी गई और उस किताब पर जो उन की तरफ उतारी गई जो अल्लाह के लिए ख़ुशूअ करने वाले हैं,

الثلاثة

لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

वो अल्लाह की आयात के बदले में थोड़ी क़ीमत नहीं लेते। उन के लिए

اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹۹﴾

उन के रब के पास उन का अज्र है। यक़ीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाले हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۟

ऐ ईमान वालो! सब्र करो और एक दूसरे को मज़बूत करो और पेहले से तय्यारी रखो।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۲۰۰﴾ ع ۲۰

और अल्लाह से डरो ताके फलाह पाओ।

اٰيَاتُهَا ۱۷۶ سُوْرَةُ النِّسَآءِ مَدَنِيَّةٌ (۹۲) (۴) رُكُوْعَاتُهَا ۲۴

और २४ रूकूअ हैं सूरह निसा मदीना में नाज़िल हुई इस में १७६ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ

ऐ इन्सानो! अपने उस रब से डरो जिस ने तुम्हें पैदा किया

مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا

एक जान से और उन्ही से उन की बीवी को पैदा किया और उन दोनों से

رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ

बहोत से मर्दों और बहोत सी औरतों को फैलाया। और डरो उस अल्लाह से जिस के वासते से तुम एक दूसरे

بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ۝

से सवाल करते हो और रिश्तेदारी तोड़ने से डरो। यक़ीनन अल्लाह तुम पर निगरां है।

وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ

और यतीमों को उन का माल दो और हलाल के बदले में हराम को (पाकीज़ा के बदले में गन्दे को)

بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَهُمْ اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ؕ

मत लो। और उन के मालों को अपने मालों के साथ मिला कर के मत खाओ।

اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ﴿۲﴾ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا

यक़ीनन ये बड़ा गुनाह है। और अगर डरो इस से के तुम इन्साफ नहीं कर सकोगे

فِي الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى

यतीमों के बारे में तो तुम निकाह करो उन औरतों से जो तुम्हें अच्छी लगें, दो दो से

وَثُلٰثَ وَ رُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً

और तीन तीन से और चार चार से। फिर अगर डरो इस से के तुम अदल नहीं कर सकोगे तो फिर एक ही से निकाह करो

اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَلَّا تَعُوْلُوْا ؕ﴿۳﴾

या अपनी बांदियों से। ये इस के ज़्यादा क़रीब है के बिल्कुल एक की तरफ तुम माइल न हो जाओ।

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ

और औरतों को उन के महर (खुशी से) दो। फिर अगर वो तुम्हें खुशदिली से उस में से

عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا ﴿۴﴾ وَلَا تُؤْتُوا

कोई चीज़ दें तो तुम उस को खाओ, खुशगवार और आसानी से हलक़ से उतरने वाला होने की हालत में। और

السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِيْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا

बेवक़ूफों को अपना वो माल मत दो जिन पर अल्लाह ने तुम्हें निगरां बनाया है

وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَ قُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا

और उस में से उन को खाना दो और उन को कपड़ा दो और उन से अच्छी

مَّعْرُوْفًا ﴿۵﴾ وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰۤى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ

बात कहो। और यतीमों का इम्तिहान लो यहां तक के जब वो निकाह की उम्र को पहोंच जाएं।

فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْۤا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ

फिर अगर तुम उन की तरफ से अक़्लमन्दी को महसूस करो तो उन को उन के माल दे दो।

وَلَا تَاْكُلُوْهَاۤ اِسْرَافًا وَّ بِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ؕ وَمَنْ كَانَ

और उन को इस्राफ करते हुए मत खा जाओ और जल्दी करते हुए के कहीं वो बड़े हो जाएंगे। और जो

غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ

मालदार हो उसे चाहिए के अफीफ रहे। और जो फक़ीर हो तो वो खा सकता है

بِالْمَعْرُوْفِ ؕ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ

उर्फ के मुताबिक़। फिर जब उन को उन के माल दो

فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿۶﴾ لِلرِّجَالِ

तो तुम उन पर गवाह बना लो। और अल्लाह हिसाब लेने वाला काफी है। मर्दों के लिए

نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۪ وَلِلنِّسَآءِ

हिस्सा है उस माल में से जो वालिदैन और रिश्तेदारों ने छोड़ा। और औरतों के लिए

نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ

हिस्सा है उस माल में से जो वालिदैन और रिश्तेदारों ने छोड़ा, क़लील माल में से

مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ؕ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝۷ وَاِذَا حَضَرَ

या कसीर माल में से। मुक़र्रर किए हुए हिस्से के तौर पर। और जब तक़सीम

الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ

के वक्त रिश्तेदार और यतीम और मिसकीन हाज़िर हों

فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَ قُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝۸

तो उस में से उन को खाना दो और उन से अच्छी बात कहो।

وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا

और उन लोगों को भी डरना चाहिए के अगर वो अपने पीछे कमज़ोर औलाद छोड़ जाते

خَافُوْا عَلَيْهِمْ ۪ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝۹

तो उन पर वो डरते। तो उन्हें चाहिए के वो अल्लाह से डरें और सीधी बात कहें।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا

यक़ीनन वो लोग जो यतीमों के माल खाते हैं ज़ुल्म से वो सिर्फ

يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ وَ سَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ۝۱۰ ع ۱۲

अपने पेटों में आग भर रहे हैं। और अनक़रीब वो आग में दाख़िल होंगे।

يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ ۗ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ

अल्लाह तुम्हें ताकीदी हुक्म देते हैं तुम्हारी औलाद के बारे में के मर्द के लिए दो औरतों के हिस्से के

الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ

बराबर है। फिर अगर वो औरतें दो से ज़्यादा हों तो उन के लिए उस माल का

ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ؕ

दो तिहाई हिस्सा है जो मरने वाले ने छोड़ा। और अगर वो औरत एक हो तो उस को आधा हिस्सा मिलेगा।

وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ

और मरने वाले के वालिदैन में से हर एक के लिए छठ्ठा हिस्सा है उस माल में से जो मरने वाले ने छोड़ा

اِنْ كَانَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗٓ

अगर उस की औलाद हो। फिर अगर उस की औलाद न हो और उस के वालिदैन

اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهٗٓ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ

उस के वारिस हों तो उस की माँ को तिहाई मिलेगा। फिर अगर उस मरने वाले के भाई हों तो उस की माँ को

السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ؕ

छठ्ठा हिस्सा मिलेगा वसीय्यत के बाद जिस की वसीय्यत मरने वाला करे और क़र्ज़ अदा करने के बाद।

اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ

तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे, तुम नहीं जानते के नफे के ऐतेबार से उन में तुम से ज़्यादा क़रीब

نَفْعًا ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا

कौन है। ये मुक़र्रर किए हुए हिस्से के तौर पर है अल्लाह की तरफ से। यक़ीनन अल्लाह इल्म वाले,

حَكِيْمًا ﴿۱۱﴾ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ

हिक्मत वाले हैं। और तुम्हारे लिए उस माल का आधा हिस्सा है जो तुम्हारी बीवियों ने छोड़ा अगर

لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ

उन की औलाद न हो। फिर अगर उन की औलाद हो तो तुम्हारे लिए

الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ

चौथाई हिस्सा है उस माल में से जो बीवियाँ छोड़ें वसीय्यत के बाद जिस की वो वसीय्यत करें

اَوْ دَيْنٍ ؕ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ

और क़र्ज़ अदा करने के बाद। और उन औरतों के लिए चौथाई हिस्सा है उस माल में से जो तुम शौहर छोड़ो अगर

لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ

तुम्हारी औलाद न हो। फिर अगर तुम्हारी औलाद हो तो उन्हें आठवां हिस्सा मिलेगा

مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ؕ

उस माल में से जो तुम शौहरों ने छोड़ा वसीय्यत के बाद जिस की तुम वसीय्यत करो और क़र्ज़ अदा करने के बाद।

وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّلَهٗٓ اَخٌ

और अगर कोई मर्द ऐसा हो के जिस का वारिस बना जा रहा हो कलाला होने की हालत में या कोई औरत हो इस हाल में

اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنْ كَانُوْٓا

के उस का कोई भाई हो या कोई बेहेन हो, तो उन में से हर एक को छठ्ठा हिस्सा मिलेगा। फिर अगर वो

اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ

उस से ज़्यादा हों तो वो सब तिहाई में शरीक होंगे वसीय्यत के बाद

وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً

जिस की वसीय्यत की जाए और क़र्ज़ अदा करने के बाद, इस हाल में के किसी को ज़रर नहीं पहोंचाया जाएगा। ये

مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۲﴾ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۗ

अल्लाह की तरफ से ताकीदी हुक्म है। और अल्लाह इल्म वाले, हिल्म वाले हैं। ये अल्लाह की हुदूद हैं।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

और जो अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करेगा तो अल्लाह उसे जन्नतों में दाखिल करेंगे जिन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۳﴾

नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। और ये भारी कामयाबी है।

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ

और जो अल्लाह और उस के रसूल की नाफरमानी करेगा और उस की हुदूद से तजावुज़ करेगा, तो अल्लाह उसे आग में

نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۴﴾ ع وَالّٰتِيْ

दाखिल करेंगे, उस में वो हमेशा रहेगा। और उस के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब होगा। और जो

يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا

औरतें तुम्हारी औरतों में से बेहयाई (यानी ज़िना) का इर्तिकाब करें तो तुम उन के

عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ

खिलाफ तुम में से चार को गवाह बना लो। फिर अगर वो गवाह गवाही दें तो उन औरतों को रोक लो घरों में

فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰىهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ

यहां तक के उन को मौत आ जाए या अल्लाह उन के लिए

لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿۱۵﴾ وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ

कोई दूसरा रास्ता पैदा कर दे। और तुम में से जो मर्द इस बेहयाई को करें (लवातत) तो उन दोनों को ईज़ा दो।

فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ

फिर अगर वो तौबा करें और इस्लाह करें तो उन से ऐराज़ कर लो। यक़ीनन अल्लाह

كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۱۶﴾ اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ

तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम वाला है। सिर्फ उन लोगों की तौबा क़बूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है

يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ

जो बुरे काम करते हैं नावाक़िफ़ीय्यत से, फिर क़रीब ही में तौबा कर

مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ

लेते हैं, तो अल्लाह उन की तौबा क़बूल करेंगे। और अल्लाह

عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۷﴾ وَ لَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ

इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और उन लोगों की तौबा क़बूल नहीं है जो बुराइयाँ करते

السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ

रेहते हैं। यहां तक के जब उन में से किसी एक की मौत का वक़्त क़रीब आ जाता है, तब वो केहता है के

اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ

मैं अब तौबा करता हूँ और न उन लोगों की तौबा क़बूल की जाती है जो मरते हैं इस हाल में के वो काफिर होते हैं।

اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۸﴾ يٰٓاَيُّهَا

हम ने उन के लिए दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर रखा है। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ

ईमान वालो! तुम्हारे लिए हलाल नहीं है के औरतों के ज़बर्दस्ती वारिस

كَرْهًا ؕ وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ

बन जाओ। और उन औरतों को मत रोको ताके तुम ले लो उस माल का कुछ हिस्सा

مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ

जो तुम ने उन औरतों को दिया है, मगर ये के वो खुली बेहयाई करें।

وَ عَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ

और उन के साथ ज़िन्दगी गुज़ारो भलाई के मुताबिक़। फिर अगर उन्हें नापसन्द करो

فَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا

तो शायद के तुम किसी चीज़ को नापसन्द करो और अल्लाह ने उस में बहोत सारी भलाई

كَثِيْرًا ﴿۱۹﴾ وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ

रखी हो। और अगर तुम एक बीवी की जगह दूसरी बीवी बदलने का इरादा

زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ

करो, इस हाल में के तुम ने उन में से किसी एक को ढेरों माल दिया हो, तब भी उस में से कुछ

شَيْـًٔا ؕ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۲۰﴾ وَ كَيْفَ

मत लो। क्या तुम उस को लेते हो बोहतान होने की हालत में और खुला हुवा गुनाह होने की हालत में? और तुम कैसे

تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ

उस को लेते हो हालांके तुम में से एक दूसरे तक पहोंच चुका है

وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿۲۱﴾ وَلَا تَنْكِحُوْا

और उन औरतों ने तुम से भारी अहद लिया है? और निकाह मत करो

مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ

उन औरतों से जिन से तुम्हारे बाप दादा ने निकाह किया हो मगर वो जो पेहले हो चुका।

اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿۲۲﴾ ع ۴

यक़ीनन ये बेहयाई है और अल्लाह की नफरत का मूजिब है और बुरा रास्ता है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَ اَخَوٰتُكُمْ

तुम पर हराम की गईं तुम्हारी माएं और तुम्हारी बेटियाँ और तुम्हारी बेहनें

وَ عَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ

और तुम्हारी फूफियाँ और तुम्हारी खालाएं और भाई की बेटियाँ और बेहेन की बेटियाँ

وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ

और तुम्हरी वो माएं जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी रज़ाई बेहनें

وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ

और तुम्हारी बीवियों की माएं और तुम्हारी रबीबा औलाद, जो तुम्हारी परवरिश में हैं

مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ز فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا

तुम्हारी बीवियों की तरफ से, (उन बीवियों की तरफ से) जिन से तुम ने दुखूल किया (सोहबत की)। फिर अगर तुम

دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ز وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ

ने उन से दुखूल न किया हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है। और हराम की गईं तुम्हारे उन बेटों की बहुएं

الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ

जो तुम्हारी पुश्तों से हैं। और हराम किया गया ये के तुम जमा करो दो बेहनों को

اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۲۳﴾

मगर वो जो पेहले हो चुका। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।